प्रकाशन तिथि : 26 जनवरी 2017, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 35, अंक 7, कुल पृष्ठ 36

ISSN 2454 - 5163

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

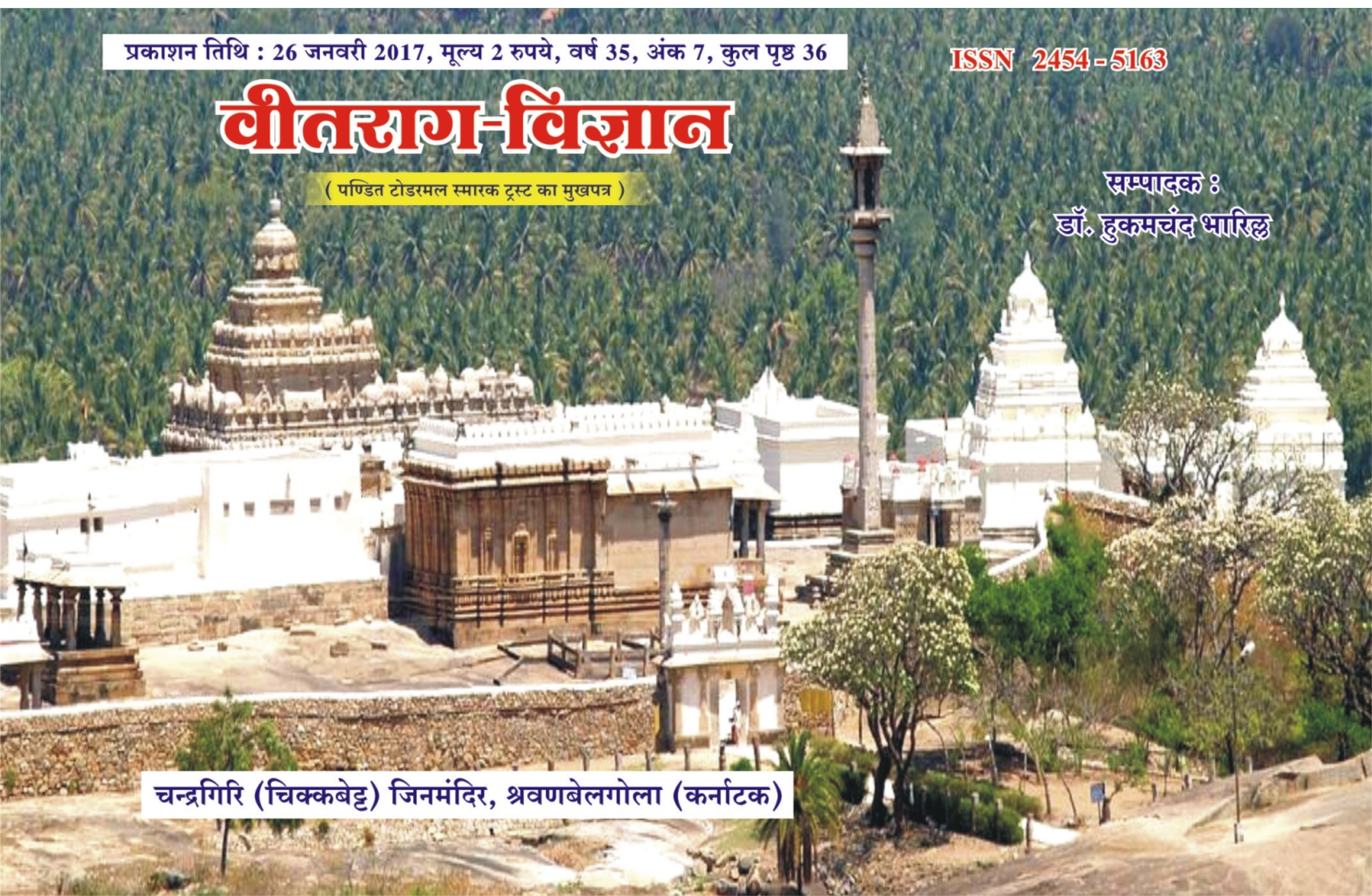

चन्द्रगिरि (चिक्कबेट्ट) जिनमंदिर, श्रवणबेलगोला (कर्नाटक)

वीतराग-विज्ञान (402)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015
फोन :(0141)2705581, 2707458
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7200
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	**10200**

करण शक्ति

लोगों ने स्थूलरूप से (बाह्य दृष्टि से) बाह्य साधनों को स्वीकार कर लिया है; किन्तु सूक्ष्मरूप से अन्तर्दृष्टि करके अपने धर्म का यथार्थ साधन कभी नहीं ढूंढा। अरे ! बाह्य में अपने हित का साधन मानकर मैं अनन्तकाल से प्रयत्न कर रहा हूँ, तथापि मुझे अपने हित की प्राप्ति नहीं हुई, इसलिये अन्तर में कोई अन्य साधन होना चाहिये - इसप्रकार गहराई से विचार करके जीव ने कभी सच्चे साधन की खोज नहीं की। अरे ! विकार से भिन्न मेरे आत्मा का अनुभव किस साधन से होगा ? - इसप्रकार जिसके अन्तर में गहरी जिज्ञासा जागृत हुई है, उसे साधन बतलाते हुए आचार्यदेव कहते हैं कि आत्मा और बन्ध को पृथक् करने रूप कार्य में कर्ता जो आत्मा है उसके करण (साधन) सम्बन्धी गहरी विचारणा-मीमांसा की जाने पर निश्चय से अपने से भिन्न करण का अभाव होने से भगवती प्रज्ञा ही छेदनात्मक करण है। उस प्रज्ञा द्वारा उनका छेदन किये जाने पर वे अवश्य ही पृथक्त्व को प्राप्त होते हैं, इसलिये प्रज्ञा द्वारा ही आत्मा और बन्ध को भिन्न किया जाता है अर्थात् प्रज्ञारूपी साधन द्वारा ही उनका भेदज्ञान होता है।

- आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 525-526

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 35 (वीर नि. संवत् - 2543) 402 अंक : 7

हम बैठे अपनी मौन सौं !

दिन दस के मेहमान जगतजन, बोलि विगारै कौन सौं।।टेक।।
गये विलाय भरम के बादर, परमारथ-पथ-पौन सौं।
अब अन्तर गति भई हमारी, परचे राधा रौन सौं[1]।।
हम बैठे अपनी मौन...।।1।।
प्रगटी सुधापान की महिमा, मन नहिं लागै बौन[2] सौं।
छिन न सुहाय और रस फीके, रुचि साहिब के लौन[3] सौं।।
हम बैठे अपनी मौन...।।2।।
रहे अघाय पाय सुख संपति, को निकसै निज भौन सौं।
सहज भाव सद्गुरु की संगति, सुरझै आवागौन सौं।।
हम बैठे अपनी मौन...।।3।।

1. आत्मा के सौंदर्य से हमारा परिचय हुआ।
2. वमन 3. सुन्दरता

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित
पंचतीर्थ जिनालय का

पंचम वार्षिक महोत्सव

एवं प्रथम बार डॉ.भारिल्ल द्वारा रचित

प्रवचनसार मंडल विधान

रविवार, 26 फरवरी से मंगलवार, 28 फरवरी, 2017 तक

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया था। महोत्सव की यादें सभी को पुन: ताजा हो जावें, इस हेतु पंचकल्याणक का पंचम वार्षिक महोत्सव एवं डॉ. हुकमचंद भारिल्ल द्वारा रचित श्री प्रवचनसार मंडल विधान का प्रथम बार आयोजन रविवार, 26 फरवरी से मंगलवार 28 फरवरी 2017 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि विशिष्ट विद्वानों का प्रवचनों, प्रौढ कक्षाओं व गोष्ठियों के माध्यम से तत्त्वज्ञान का अपूर्व लाभ प्राप्त होगा।

इस मंगल महोत्सव में आप सभी सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

विशिष्ट आकर्षण

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के भवतापहारी सी.डी. प्रवचन
- श्री प्रवचनसार मंडल विधान का आयोजन
- जिनेन्द्र भक्ति संध्या
- आत्मार्थी विद्वानों के व्याख्यान एवं कक्षाओं का आयोजन
- राजस्थान जैन सभा के नवनिर्वाचित प्रतिनिधियों का सम्मान (रविवार, 26 फरवरी, प्रात: 10 बजे से)
- 'टोडरमल से टोडरमल स्मारक तक' नामक नाट्य प्रस्तुति

सम्पादकीय

कुन्दकुन्द शतक अनुशीलन

(गतांक से आगे ...)

बात यह है कि **आचार्य, साधु और आचार्य दोनों एकसाथ हैं, पर साधु मात्र साधु ही हैं; अत: उनका समावेश आचार्य पद में संभव नहीं है।**

यदि कोई कहे कि एक ओर तो आप कहते हैं कि आचार्य और उपाध्यायों को मंगल, उत्तम और शरण में शामिल नहीं किया गया है, क्योंकि ये पद मुक्तिमार्ग में आवश्यक नहीं हैं, साधक नहीं हैं, अपितु बाधक हैं और **दूसरी ओर कहते हैं कि उन्हें साधुपद में शामिल कर लिया गया है। क्या ये परस्पर विरोधी बातें नहीं हैं?**

नहीं; क्योंकि ये तो विभिन्न अपेक्षाओं का दिग्दर्शन है, इसमें कोई विरोधाभास नहीं है। दूसरी बात यह भी तो है कि जो आचार्यों को साधु पद में शामिल किया गया, वह उनके साधुपद के कारण ही किया गया है, आचार्यपद के कारण नहीं।

अत: मुख्य बात तो यही है कि मुक्ति के मार्ग में अनावश्यक होने से आचार्य और उपाध्याय पद को गौण किया गया है। गजब की बात तो यह है कि आचार्यों और उपाध्यायों से दीक्षादि ली जाती है, उपदेश की प्राप्ति होती है, फिर भी उनकी शरण में जाने को तो गौण किया है और जिन सिद्ध व साधु परमेष्ठी से कोई प्रत्यक्ष उपकार संभव नहीं होता, उनकी शरण चाही गयी है। इससे भी यही प्रतीत होता है कि इसमें मोक्ष और मोक्षमार्ग के प्रति अति बहुमान व्यक्त करना ही मूल उद्देश्य है, शरण में जाने का अर्थ इससे अधिक कुछ नहीं।

मुक्ति और मुक्तिमार्ग में अरहंत, सिद्ध और साधुपद तो आते हैं, पर आचार्य और उपाध्याय पद आना अनिवार्य नहीं है। आचार्य पद तो प्रशासन का पद है और उपाध्याय पद अध्यापन का पद है; दोनों में ही माथे पर भार रहता है। जबतक माथे पर भार रहेगा, तबतक क्षपकश्रेणी माँड़ना संभव नहीं है, क्षपकश्रेणी निर्भार व्यक्तियों को ही होती है।

उक्त सम्पूर्ण विवेचन से सहज ही यह निष्कर्ष निकलता है कि णमोकार महामंत्र में जो शरण में जाने की बात कही गई है, वह भी कुछ माँग नहीं है; अपितु बहुमान की बात ही है; तथापि पर की शरण की बात कही तो गई है न, पर आचार्य कुन्दकुन्द तो पर की शरण में जाने की बात ही नहीं करते। वे तो साफ-साफ कहते हैं –

''अरहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु हैं परमेष्ठी पण।
सब आतमा की अवस्थाएँ, आतमा ही है शरण।।''

अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और सर्वसाधु ये सब हैं क्या ? आखिर एक आत्मा की ही अवस्थाएँ हैं न ? एक निज भगवान आत्मा के आश्रय से ही उत्पन्न हुई अवस्थाएँ हैं न ? तो फिर हम इनकी शरण में क्यों जावें, हम तो उस भगवान आत्मा की ही शरण में जाते हैं, जिसकी ये अवस्थायें हैं, जिसके आश्रय से ये अवस्थायें उत्पन्न हुई हैं।

सर्वाधिक महान, सर्वाधिक उपयोगी, ध्यान का ध्येय, श्रद्धान का श्रद्धेय एवं परम शुद्धनिश्चयनरूप ज्ञान का ज्ञेय तो निज भगवान आत्मा ही है, उसकी शरण में जाने से ही मुक्ति के मार्ग का आरंभ होता है, मुक्तिमार्ग में गमन होता है और मुक्तिमहल में पहुँचना संभव होता है।

सिद्ध भगवान तो मुक्त ही हैं तथा अरहंत, आचार्य, उपाध्याय और सर्व साधु मुक्तिमार्ग के पथिक हैं तथा सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र – इन तीनों की एकता मुक्तिमार्ग है। मुक्तिदशा, मुक्तिमार्ग के पथिकरूप साधकदशा

तथा मुक्तिमार्गरूप साधनदशा सभी आत्मा की ही अवस्थाएँ हैं। ये सभी अवस्थायें निज भगवान आत्मा के आश्रय से ही उत्पन्न होती हैं। इसलिए **निज भगवान आत्मा की शरण में जाना ही सुखी होने का एकमात्र उपाय है।**

पंचपरमेष्ठी हमारे लिए पूज्य हैं, प्रात:स्मरणीय हैं, वंदनीय हैं, अभिनंदनीय हैं और सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र साक्षात् मुक्ति का मार्ग हैं। हमें परमेष्ठी पद में स्थित होना है और सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप रत्नत्रय की आराधना ही पंचपरमेष्ठी पद में स्थित होना है।

इसप्रकार हमारे जीवन में पंचपरमेष्ठी एवं रत्नत्रय का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पर ये पंचपरमेष्ठी पद और रत्नत्रय धर्म सभी आत्मा की ही अवस्थाएँ हैं। इन्हें प्राप्त करने के लिए निज भगवान आत्मा का ज्ञान, श्रद्धान और ध्यान आवश्यक है। अत: **यहाँ आत्मा की ही शरण में जाने की बात कही गई है।**

यहाँ एक प्रश्न संभव है कि शरण में जाने की बात तो दो द्रव्यों के बीच में ही संभव है, स्वयं का स्वयं की शरण में जाना किसप्रकार संभव है ?

अरे भाई ! निज भगवान आत्मा को जानना, पहिचानना और उसमें जमना-रमना ही आत्मा की शरण में जाना है।

त्रिकालीध्रुव निज भगवान आत्मा को जानना और यह जानना कि 'यही मैं हूँ' निज भगवान आत्मा की सम्यग्ज्ञानरूप उपासना है, निज भगवान आत्मा की शरण में जाना है।

त्रिकालीध्रुव निज भगवान आत्मा में अपनापन स्थापित करना – 'ये ही मैं हूँ' – ऐसी दृढ़ प्रतीति करना ही आत्मा की सम्यग्दर्शनरूप उपासना है, त्रिकालीध्रुव निज भगवान आत्मा को निजरूप जानना, सम्यग्ज्ञानरूप उपासना है और त्रिकालीध्रुव निज भगवान आत्मा में लीन हो जाना, रम जाना, जम जाना, समा जाना, उसी का ध्यान करना, निज भगवान की

सम्यक् चारित्ररूप उपासना है, निज भगवान आत्मा की शरण में जाना है।

इसी बात को समयसार की आत्मख्याति नामक टीका में समागत १५ वें कलश में इसप्रकार कहा है –

(अनुष्टुप)

''एष ज्ञानघनो नित्यमात्मा सिद्धिमभीप्सुभिः।
साध्यसाधकभावेन द्विधैकः समुपास्यताम् ।।

(हरिगीत)

है कामना यदि सिद्धि की ना चित्त को भरमाइये।
यह ज्ञान का घनपिण्ड चिन्मय आतमा अपनाइये।।
बस साध्य-साधक भाव से इस एक को ही ध्याइये।
अर आप भी पर्याय में परमातमा बन जाइये।। १५।।

स्वरूप की प्राप्ति के इच्छुक पुरुष साध्यभाव और साधकभाव से इस ज्ञान के घनपिण्ड भगवान आत्मा की ही उपासना करें।''

यहाँ आचार्य महाराज उपदेश दे रहे हैं, आदेश दे रहे हैं कि हे आत्मार्थी पुरुषो ! आत्मा का कल्याण चाहनेवाले सत्पुरुषो !! तुम निरन्तर ज्ञान के घनपिण्ड आनंद के रसकंद इस भगवान आत्मा की ही उपासना करो। **उपासना करने योग्य तो एकमात्र यह ज्ञान का घनपिण्ड और आनंद का रसकंद अपना भगवान आत्मा ही है, अन्य कोई नहीं।**

यहाँ आत्मा की उपासना करने का तात्पर्य निज आत्मा की पूजा-भक्ति करने से नहीं है, स्तुति-वंदना करने से भी नहीं है, नमस्कारादि करने से भी नहीं है; अपितु **उसे सही रूप में जानने से है, पहिचानने से है, उसका अनुभव करने से है, उसी में समा जाने से है; उसी का नित्य ध्यान करने से है, ध्यान रखने से है; उसको ही सर्वस्व मानने से है; उसी में पूर्णतः समर्पित हो जाने से है।** यही निज भगवान आत्मा की उपासना की विधि है, आराधना की विधि है, साधना की विधि है।

निज भगवान आत्मा की यह उपासना दो प्रकार से होती है –

१. साध्यभाव से और २. साधक भाव से।

साधकदशा व साध्यदशा को निम्नानुसार पाँच प्रकार से समझ सकते हैं –

१. चौथे गुणस्थान से लेकर चौदहवें गुणस्थान तक साधकदशा है और सिद्ध अवस्था साध्यदशा है।

२. चौथे गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान तक साधकदशा है और अरहंत और सिद्ध दशा साध्यदशा है।

३. पर्याय में पूर्णता की प्राप्ति हो जाना साध्यदशा है और आत्मोपलब्धि होकर पूर्णता की ओर अग्रसर होना साधकदशा है।

४. आत्मा में उपयोग का केन्द्रित होना और फिर बाहर आ जाना – इसप्रकार **बार-बार अन्दर जाना और बाहर आना साधकदशा है** और **उपयोग का निरन्तर आत्मोन्मुख ही रहना, बाहर आना ही नहीं साध्यदशा है।**

५. शुभोपयोग और शुद्धोपयोग में झूलना **साधकदशा** है और शुद्धोपयोग में अनन्तकाल तक के लिए समा जाना **साध्यदशा** है।

आत्मा की सिद्धदशा अमल भी है और अचल भी है; परन्तु अरहंत अवस्था तो अमल है, पर अचल नहीं; क्योंकि उसमें योग के निमित्त से आत्मप्रदेशों में चंचलता पाई जाती है, चलाचलपना पाया जाता है। इस दृष्टि से विचार करें तो **अकेली सिद्धदशा ही साध्यभाव है, आत्मज्ञानी की शेष सभी दशाएँ साधकभाव में आती हैं।**

पूर्ण वीतरागी व सर्वज्ञ हो जाने से, अमलता प्राप्त हो जाने से तथा उपयोग के निरन्तर आत्मसन्मुख ही रहने से, निरन्तर शुद्धोपयोगी होने से जब अरहंत भगवान को भी साध्यदशा में ले लेते हैं तो फिर उसके पहले के धर्मात्मा जीव साधकदशा वाले कहे जाते हैं।

उपयोग का आत्मसन्मुख होना ही आत्मा की **सच्ची उपासना** है। जब वह उपयोग निरन्तर आत्मसन्मुख होता है तो उस उपासना को साध्यभाव की उपासना कहते हैं और जब वह कभी-कभी आत्मसम्मुख होता है तो उसे साधकभाव की उपासना कहते हैं।

पर एक बात तो निश्चित ही है कि **आत्मा की उपासना तो आत्मसन्मुख होने में ही है, आत्मज्ञान में ही है, आत्मध्यान में ही है, अपने में अपनापन स्थापित करने में ही है। इन्हीं का नाम निश्चयरत्नत्रय है – निश्चय-सम्यग्दर्शन, निश्चय-सम्यग्ज्ञान और निश्चय-सम्यक्चारित्र है।**

तात्पर्य यह है कि निश्चयसम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की प्राप्ति ही निज भगवान आत्मा की उपासना है, निज भगवान आत्मा की आराधना है, निज भगवान आत्मा की साधना है, निज भगवान आत्मा की शरण में जाना है।

इसप्रकार यह सुनिश्चित हुआ कि **निरन्तर आत्मध्यान की दशा ही साध्यभाव की उपासना है और कभी-कभी आत्मध्यान की दशा का होना, साधकभाव की उपासना है।**

आत्मा के कल्याण के इच्छुक पुरुषों को, चाहे वे साध्यभाव से उपासना करें या साधकभाव से उपासना करें, पर उपासना तो नित्य निज भगवान आत्मा की ही करना चाहिए।

यह निज भगवान आत्मा की उपासना ही आत्मा की शरण में जाना है। उक्त गाथा में आचार्य कुन्दकुन्द ने इसी की भावना भायी है।

उक्त गाथाएँ मोक्षपाहुड़ की १०४ एवं १०५वीं गाथाएँ हैं और उसके ठीक पहले १०३वीं गाथा में आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं –

''णविएहिं जं णविज्जइ झाइज्जइ झाइएहिं अणवरयं।
थुव्वंतेहिं थुणिज्जइ देहत्थं किं पि तं मुणह।।

(हरिगीत)

जिनको नमें थुति करे जिनकी ध्यान जिनका जग करे।
वे नमें ध्यावें थुति करें तू उसे ही पहिचान ले।।१०३।।

हे भव्यजीवो ! जिनको सारी दुनिया नमस्कार करती है, वे भी जिसको नमस्कार करें, जिनकी सारी दुनिया स्तुति करती है, वे भी जिसकी स्तुति करें एवं जिनका सारी दुनिया ध्यान करती है, वे भी जिसका ध्यान करें – ऐसे देहदेवल में विराजमान भगवान आत्मा को जानो।''

वंदनीय पुरुषों द्वारा भी वंदनीय, स्तुति योग्य पुरुषों द्वारा भी स्तुत्य एवं जगत के ध्येय पुरुषों का भी ध्येय यह भगवान आत्मा ही शरण में जाने योग्य है – यह जानकर ही आत्मा की शरण में जाने की बात कही गयी है। पंचपरमेष्ठी भगवन्तों ने भी जिसकी शरण को ग्रहण कर रखा है और रत्नत्रय धर्म भी जिसकी शरण का ही परिणाम है; उस भगवान आत्मा को ही जानने की प्रेरणा दी गई है इस गाथा में। उसे ही जानने-पहिचानने का आदेश दिया है आचार्य भगवन्त ने और उसी में जम जाने, रम जाने का उपदेश आता है तीर्थंकरों की दिव्यध्वनि में।

यह बात द्वादशांगरूप दिव्यध्वनि का सार है, यही बात लाख बात की बात है और यही कोटि ग्रन्थों का सार है। जैसा निम्नांकित पंक्तियों में कहा गया है –

लाख बात की बात यहै निश्चय उर लाओ।
तोरि सकल जग दन्द-फन्द निज आतम ध्याओ।।[१]
कोटि ग्रंथ को सार यही है ये ही जिनवाणी उचरो है।
दौल ध्याय अपने आतम को मुक्ति रमा तोय वैग वरै है।।[२]

उक्त पंक्तियों में अत्यन्त स्पष्टरूप से यह कहा गया है कि अधिक बात

१. पण्डित दौलतराम : छहढाला, चौथी ढाल, छन्द ९
२. पण्डित दौलतराम : भजन की पंक्ति

करने से क्या लाभ है, लाख बात की बात तो यह है कि जगत के दन्द-फन्द प्रपंचों को छोड़कर एक निज भगवान आत्मा का ही ध्यान धरो। उक्त पंक्ति में प्रकारान्तर से यह भी कह दिया गया है कि **एक आत्मा के ध्यान के अतिरिक्त जो भी है, वह सभी दन्द-फन्द ही हैं।**

करोड़ ग्रंथों का सार भी यही है और सम्पूर्ण जिनवाणी में भी यही आया है, सम्पूर्ण जिनागम में भी यही कहा है कि अपने आत्मा का ध्यान धरो। यदि तुम ऐसा कर सके तो मुक्तिरूपी कन्या अतिशीघ्र ही तुम्हारा वरण करेगी, तुम्हारे गले में वरमाला डाल देगी।

मुक्तिरूपी कन्या प्राप्त करने के लिए तुम्हें मुक्तिरूपी कन्या का ध्यान धरने की आवश्यकता नहीं है, तुम तो स्वयं का ध्यान धरो। निज भगवान आत्मा को ही ज्ञान का ज्ञेय बनाओ, ध्यान का ध्येय बनाओ; मुक्तिरूपी कन्या स्वयं उपस्थित होकर तुम्हारा वरण करेगी, तुम्हारे गले में वरमाला डालेगी।

मुक्तिरूपी कन्या उनका वरण नहीं करती है, जो उसका ध्यान धरते हैं, किन्तु उनका ही वरण करती है, जो निज भगवान आत्मा का ध्यान धरते हैं। **वह आत्मा पर रींझनेवालों पर ही रींझती है।**

तात्पर्य यह है कि **मुक्ति, मुक्ति का ध्यान धरनेवालों को प्राप्त नहीं होती, त्रिकालीध्रुव निज भगवान आत्मा का ध्यान धरनेवालों को ही प्राप्त होती है। इसीलिए इन गाथाओं में निज भगवान आत्मा की शरण में जाने की बात कही गई है।**

एक युवक जीवनसाथी बनाने के लिए एक युवती को देखने गया। दोनों ही अत्यन्त सुन्दर और सब प्रकार से सुयोग्य थे। एक-दूसरे को देखकर दोनों ही एक-दूसरे पर मोहित हो गये। यद्यपि दोनों ने ही एक-दूसरे को पसन्द कर लिया था, पर कुछ देर तक कोई कुछ नहीं बोला।

भारतीय युवितयाँ तो सहज संकोची होती ही हैं। अत: पहले लड़की

के बोलने का तो कोई सवाल ही नहीं था, पर युवक भी उसकी सुन्दरता देखकर स्तब्ध-सा रह गया। वह उस युवती पर आवश्यकता से अधिक रींझ गया था। अत: उसके हृदय में आशंकाओं के बादल मंडराने लगे। वह सोचने लगा – यह तो बहुत ही सुन्दर है, मुझे तो यह पूर्णत: पसन्द आ गई है, पर कहीं ऐसा न हो जाये कि यह मुझे नापसन्द कर दे। यदि इसने मुझे नापसन्द कर दिया तो मेरा तो जीना ही मुश्किल हो जावेगा।

वह इस भय से आक्रान्त हो गया कि कहीं यह मुझे अस्वीकार न कर दे – इस हीन भावना से ग्रस्त वह उससे और कोई बात न कर व्याकुल होकर पूछने लगा – ''मैं तुम्हें पसन्द आया या नहीं ?''

स्वभाव से संकोची भारतीय ललना कुछ भी न बोल सकी तो उसकी आशंका और भी प्रबल हो उठी; अत: वह और भी अधिक दीन हो गया और अत्यन्त मायूसी से कहने लगा –

''क्या मैं तुम्हें सचमुच ही पसन्द नहीं आया ?''

उसके बार-बार पूछने पर भी वह लड़की हाँ या न तो न कह सकी, पर नीची निगाह किए हुए ही धीरे से बोली –

''क्या मैं आपको पसन्द आ गई हूँ ?''

''हाँ, हाँ; एकदम। तुम तो देवांगनाओं से भी अधिक सुन्दर हो, पर मैं तुम्हें पसन्द आया या नहीं ?'' – एकदम अस्त-व्यस्त-सा युवक बोला, पर लड़की नीची निगाह किए मात्र मुस्कुरा कर ही रह गई।

सुसभ्य एवं सुसंस्कृत भारतीय कन्यायें अपनी सहमति इसप्रकार ही व्यक्त करती हैं। **मौनं सम्मति लक्षणम् –** मौन सम्मति का ही लक्षण है – इस बात को जाननेवाले विवेक के धनी तो सब समझ ही जाते हैं, पर आकुल-व्याकुल वह युवक कुछ भी न समझ सका, अपितु उसकी आशंका और भी अधिक प्रबल हो उठी। अत: घबड़ाकर वह उसके हाथ जोड़ने

लगा, पैर पड़ने लगा और कहने लगा कि तुम मुझे अस्वीकार न कर देना, अन्यथा मेरा जीना ही मुश्किल हो जावेगा।

उसकी यह व्याकुलता देखकर कन्या उससे विरक्त हो गई; क्योंकि उसे तो ऐसा पति चाहिए था कि जिसकी वह विनय करे, पर यहाँ तो उल्टा ही होने लगा था।

जिसप्रकार ऐसे हीन व्यक्तित्व के धनी पुरुषों को भारतीय ललनाएँ पसन्द नहीं करती, उसीप्रकार मुक्ति पर्याय पर भी इस सीमा तक रींझने वालों को मुक्ति नहीं मिलती। जिसप्रकार अपने पौरुष से गौरवान्वित पुरुषों के गले में ही सुयोग्य कन्यायें वरमाला डालती हैं; उसीप्रकार **भगवान स्वरूप अपने आत्मा पर रीझें पुरुषों के गले में ही मुक्तिरूपी कन्या वरमाला डालती है।**

जो व्यक्ति मोक्ष अर्थात् सिद्धदशा की सुखकरता-सुन्दरता देखकर-जानकर उसकी महिमा से इतने आक्रान्त हो जाते हैं कि उन्हें अपना स्वभाव ही तुच्छ भासित होने लगता है; वे उस युवक के समान हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं और **मुक्ति (सिद्धदशा) की कामना में पंच-परमेष्ठी के सामने गिड़गिड़ाने लगते हैं – ऐसे लोगों को मुक्ति प्राप्त नहीं होती।**

दीन-हीन व्यवहार में लीन पुरुषों को मुक्ति प्राप्त नहीं होती। इस बात को बनारसीदासजी इसप्रकार व्यक्त करते हैं –

''लीन भयौ विवहार में उकति न उपजै कोइ।
दीन भयौ प्रभु पद जपै मुकति कहाँ सौं होइ ?।।''
''प्रभु सुमरो पूजौ पढौ, करौ विविध विवहार।
मोख सरूपी आतमा, ज्ञानगम्य निरधार।।[1]''

इसीकारण आचार्य कुन्दकुन्द भी उक्त गाथाओं में अन्य सब विकल्पों को तोड़कर निज भगवान आत्मा की शरण में जाने की बात करते हैं। वे

कहते हैं कि जब पंचपरमेष्ठी पद और सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र आत्मा की ही अवस्थाएँ हैं तो फिर हम आत्मा की ही शरण में क्यों न जायें, यहाँ-वहाँ क्यों भटकें ?

अरे भाई, पर भगवान या पर्यायरूप भगवान की शरण में जानेवाले भगवानदास बनते हैं, भगवान नहीं। यदि स्वयं ही पर्याय में भगवान बनना हो तो निज भगवान आत्मा की ही शरण में जाना होगा, उसका ही ध्यान धरना होगा, उसमें ही समा जाना होगा – इस बात को कभी भूलना नहीं चाहिए।

इसप्रकार इन दो गाथाओं में भगवान बनने की विधि बता दी गई है।

१. नाटक समयसार, निर्जराद्वार, छन्द २२-२३

(क्रमशः)

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

1 से 6 फरवरी	दीवानगंज-भोपाल	पंचकल्याणक
12 व 13 फरवरी	हस्तिनापुर	चिदायतन शिलान्यास
26 से 28 फरवरी	जयपुर	वार्षिकोत्सव एवं स्वर्ण जयन्ती समापन समारोह
5 से 12 मार्च	रामाशाह दि.जैन मंदिर मल्हारगंज, इन्दौर	समयसार विधान
2 से 9 अप्रैल	आत्मसाधना केन्द्र-दिल्ली	शिविर, कन्या निकेतन का दीक्षान्त समारोह, विज्ञान वाटिका पुरस्कार वितरण एवं उपकार दिवस
24 से 28 अप्रैल	देवलाली-नासिक	आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी जयन्ती
21 मई से 7 जून	खनियांधाना (म.प्र.)	प्रशिक्षण शिविर

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

छहढाला प्रवचन

निजात्म-ध्यान की प्रेरणा

पुण्य-पाप फल मांहि, हरख बिलखौं मत भाई।
यह पुद्गल परजाय, उपजि विनसै फिर थाई ।।
लाख बात की बात, यहै निश्चय उर लाओ।
तोरि सकल जग दन्द-फन्द, निज आतम ध्याओ ।।९ ।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की चौथी ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

अब, जैसे पुण्य का संयोग हित प्रदान नहीं करता, वैसे ही पाप के फल में असाता आदि प्रतिकूलता भी हित को नहीं रोकती। उस समय भी यदि भेदज्ञान करे तो यह जीव अपना हित कर सकता है। संयोग क्या करेगा ? नरक में भी जीव सम्यग्दर्शन पाता है, वहाँ संयोग तो एक तरफ पड़ा रहता है और जीव संयोग का लक्ष्य छोड़कर अपने अन्तर में उतरकर अपूर्व शान्ति प्रकट करता है।

संयोग संयोग में रहता है और आत्मा में उसका प्रवेश नहीं है। जैसे संयोग के समय जीव आर्तध्यान और रौद्रध्यान कर सकता है, वैसे ही लक्ष्य बदलकर संयोग से भिन्न आत्मा के लक्ष्य से भेदज्ञान करके धर्मध्यान भी कर सकता है। करोड़ों प्रतिकूलतायें दु:ख का कारण नहीं हैं तथा करोड़ों अनुकूलतायें सुख का कारण नही हैं, तथापि उनको दु:ख या सुख का कारण माननेवाला जीव मिथ्यात्व के महान पाप का सेवन करता हुआ संयोगबुद्धि से अनन्त राग-द्वेष करता है और अनन्त कर्मों से बँधता है।

संयोग से भिन्न आत्मा को जानकर आत्मा की भावना करने वाले जीव को भविष्य में ऐसे प्रतिकूल संयोग भी नहीं आते। संयोग की भावना करनेवाला

जीव, स्वभाव की भावना छोड़कर, स्वभाव का विराधक होकर ऐसे कर्म बांधता है, जिससे भविष्य में महा प्रतिकूल संयोग आते हैं। इसलिए कहते हैं कि हे भाई ! तू वर्तमान में ऐसा सुयोग पाकर लाख प्रतिकूलताओं के बीच भी और बाहर में लाख काम छोड़कर भी अपने आत्मा को पहिचान कर उसका ध्यान कर। आत्मा पुण्य-पाप के संयोग से भिन्न स्वयं परम शान्तिरूप निराकुल और ज्ञानस्वरूप है। ऐसे आत्मा को लक्ष्य में लेकर उसमें झुकी हुई पर्याय संयोग को नहीं छूती। आत्मा को हर्ष-शोक करा सके ऐसी कोई शक्ति संयोग में नहीं है।

पुण्य-पाप के फल में हर्ष-शोक नहीं करना चाहिए; परन्तु ऐसा कैसे हो? मैं पुण्य-पाप से पार चिदानन्द तत्त्व हूँ और संयोग मुझसे भिन्न है, वह मुझे सुख-दु:ख का कारण नहीं है, ऐसा भेदज्ञान करे, तभी हर्ष-शोक करना मिटे। संयोग को सामने देखते हुए ''हर्ष-शोक नहीं करना'' ऐसा कहने मात्र से हर्ष-शोक का अभाव नहीं हो सकता।

प्रश्न – ज्ञानी को भी हर्ष-शोक होता तो दिखाई देता है न ?

उत्तर – वह ज्ञान में नहीं होता, ज्ञान से भिन्नपने होता है। धर्मी जानता है कि जैसे संयोग भिन्न है, वैसे ही जो हर्ष-शोक होता है, वह भी मेरे से भिन्न है। ज्ञानी पर के कारण हर्ष-शोक नहीं मानता और ज्ञान में उनको नहीं मिलाता अर्थात् वह हर्ष-शोक उसको अत्यल्प है और वह भी सम्यग्ज्ञान धारा से तो भिन्न ही है। अज्ञानी एक ओर तो संयोग के कारण राग-द्वेष होना मानता है। पुत्रादि जन्में वहाँ हर्ष होगा ही तथा उनके मरने पर शोक होगा ही – इसप्रकार वह पर के कारण से हर्ष-शोक होना मानता है तथा दूसरी ओर वह हर्ष-शोकादि को ज्ञान से भिन्न नहीं जानता; किन्तु हर्ष-शोक ही मैं हूँ इस तरह उस रूप ही अपने को अनुभव करता हुआ उसको ज्ञान के साथ एकमेक मानता है अर्थात् ज्ञान को भूलने के कारण उसे मिथ्यात्व सहित राग-द्वेष होता है, जो अनंत दुख का कारण है। सम्यग्दृष्टि को अल्प हर्ष-शोक

होता है, जो अनन्त दु:ख का कारण है। सम्यग्दृष्टि को अल्प-हर्ष के समय उससे भिन्न सम्यग्ज्ञानधारा वर्तती है, वह ज्ञानधारा अनन्त सुखमय मोक्ष का कारण होती है – इस तरह ज्ञानी और अज्ञानी के बीच में महान अन्तर है।

सम्यग्दृष्टि चक्रवर्ती हो; किन्तु वह उस वैभव में स्वप्न में भी सुख नहीं मानता, अत: उसमें राग करने का उसका अभिप्राय नहीं होता। अज्ञानी पर-संयोग को सुख का कारण मानता है, इसलिए उसे राग करने का अभिप्राय नहीं छूटता। ज्ञानी-अज्ञानी का माप अंतरंग अभिप्रायानुसार है, बाहर के संयोग के अनुसार नहीं। जब कैलाश पर्वत से ऋषभदेव भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए, तब भरतजी को थोड़ा खेद हुआ, वह खेद भगवान के वियोग के कारण नहीं हुआ, ज्ञानधारा तो उस समय भी उस खेद से भिन्न जीवंत वर्त रही थी। अज्ञानी तो प्रतिकूल प्रसंग को ही दु:ख का कारण समझकर द्वेष करता है, उस द्वेष से भिन्न ज्ञानधारा उसके नहीं रहती, द्वेष में ही लीन होकर वह अज्ञान रूप परिणमन करता है। एक से ही प्रसंग में खेद तो दोनों को हुआ, फिर भी एक को तो उस समय खेद से भिन्न ज्ञानधारा वर्त रही है और ज्ञानधारा से वह मोक्ष साध रहा है, जबक दूसरे को उस खेद का कारण है। अरे ! वह अज्ञानी कदाचित् खेद न करे और पुत्र मरण के प्रसंग पर शान्ति रखे तो भी चैतन्य के भान बिना वह दु:ख के मार्ग में ही है। भेद-ज्ञान बिना सुख कैसे मिले ?

अहा ! भेद-ज्ञान अन्तर की कोई अपूर्व वस्तु है। वह चैतन्य तत्त्व को किसी राग-द्वेष अथवा संयोग में मिलने नहीं देता, भिन्न ही रखता है। ऐसा भेदज्ञान जिसे प्रकट हुआ, उसकी दशा ही पलट गई, उसके भाव सम्यक् हो गये। अब जो राग-द्वेष रहा, वह अनन्तवें भाग है, ज्ञान उससे भिन्न पड़कर अनन्त महान हो गया है, अनन्त शान्तिवाली वह ज्ञानधारा अपने में राग-द्वेष का अंशमात्र भी प्रवेश नहीं होने देती।

अहा ! मेरा परम आनन्द मेरे में है, वह कहीं दूसरे द्वारा लाने योग्य नहीं –

इसप्रकार जिसने अपने में अपना आनन्द देखा, वह बाहर के किसी संयोग में आनन्द नहीं मानता अर्थात् उसमें उसे हर्ष नहीं होता। अज्ञानी अपने आत्मा के आनन्द को नहीं देखता और संयोग में ही आनन्द मानता है, इसलिए उनमें हर्ष करता है। ज्ञानी किसी संयोग को प्रतिकूल नहीं मानता अर्थात् उसको दु:ख का कारण नहीं मानता, अत: उससे उसके ज्ञान में खेद नहीं होता, अज्ञानी संयोग को प्रतिकूल और दु:ख का कारण मानता है, इसलिए वह खेद करता है।

एक ओर चैतन्य का अस्तित्व, दूसरी ओर संयोग का अस्तित्व दोनों का अस्तित्व अपने-अपने में भिन्न-भिन्न है – ऐसा जो नहीं जानता वह अज्ञानी उनके अस्तित्व को एक-दूसरे में मिला देता है, किन्तु सभी संयोग चैतन्य से अत्यन्त भिन्न हैं – ऐसी भिन्नता के भान बिना जीव को कभी समभाव नहीं होता और सुख प्रकट नहीं होता। संयोग से अपनी भिन्नता जाने, तभी स्वयं चैतन्य भावरूप रहकर राग-द्वेष रहित समभाव रख सकता है और सुखी हो सकता है। इसप्रकार भेदज्ञान ही सुख का एकमात्र उपाय है। इसलिए हे भव्य ! तू अन्य लाख बातें छोड़कर, जगत के द्वन्द-फन्द त्यागकर, अपने ज्ञानस्वरूप आत्मा का अन्तर में ध्यान कर। आत्मा का ज्ञान-ध्यान करने पर ही वीतरागी समभाव होगा और कर्म सहज टल जावेंगे। इसके बिना महाव्रतादि करने पर भी कर्मों से छुटकारा नहीं मिलेगा और किंचित् भी सुख नहीं मिलेगा। इसलिए कहा है–

लाख बात की बात यहै निश्चय उर लाओ।
तोरि सकल जग द्वन्द-फन्द नित आतम ध्याओ।।

आत्मा के स्वभाव की मीठी-मधुर भावना बारम्बार करने जैसी है। जैनधर्म के सब उपदेश का सार यही है कि अपने आत्मा को जगत के पदार्थों से भिन्न तथा शुभाशुभ भावों से भी भिन्न, ज्ञान-आनन्दस्वरूप जानकर, उसको ही ध्याकर उसी में एकाग्र होना, इसमें सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र आ जाते हैं, यही मोक्षमार्ग है, यही मुमुक्षु का कर्तव्य है।

(क्रमश:)

नियमसार प्रवचन –

उपाध्याय परमेष्ठी का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 74वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलतः इसप्रकार है –

रयणत्तयसंजुत्ता जिणकहियपयत्थदेसया सूरा।
णिक्कंखभावसहिया उवज्झाया एरिसा होंति ।।७४।।

(हरिगीत)

रतनत्रय संयुक्त अर आकांक्षाओं से रहित।
तत्त्वार्थ के उपदेश में जो शूर वे पाठक मुनी ।।७४।।

रत्नत्रय से संयुक्त, जिनेन्द्रकथित पदार्थों को समझाने में शूरवीर और निकांक्ष भावनावाले मुनिराज उपाध्याय परमेष्ठी होते हैं।

(गतांक से आगे....)

वीतरागी सुखामृत का झरना आत्मा है। ऐसे आत्मा की भावना से उत्पन्न होनेवाले वीतराग सुखामृत को पीने में उपाध्याय आत्मसन्मुख हैं। धर्मात्मा अपने चैतन्यानन्द का पान करने में तत्पर हैं – ज्ञानानन्द आत्मा को चूसने में तत्पर हैं। आत्मा निरंजनस्वभाव स्वरस का कन्द है, उसमें से उत्पन्न होनेवाले परम वीतराग सुखामृत के सन्मुख हैं, इसलिए उपाध्याय महाराज निःकांक्षभावना सहित हैं। दिगम्बर धर्म में उपाध्याय इस लक्षण द्वारा लक्षित होते हैं। आत्मभानरहित अकेला नग्न रहे, क्रियाकाण्ड करे, उसे उपाध्याय या साधु नहीं कहते। जैनशासन में तो जो अविचलित चैतन्यस्वभाव में रमणता द्वारा आनन्द में परमतृप्त पड़े हैं – उन्हें उपाध्याय कहा है। ऐसे उपाध्याय को मानें तो शुभभाव होता है, तथा स्वयं अपने कारणपरमात्मा को स्वीकारे, तब धर्म होता है।

रत्नत्रयमयान् शुद्धान् भव्यांभोजदिवाकरान्।
उपदेष्टृनुपाध्यायान् नित्यं वंदे पुनः पुनः ।।१०५।।

वंदे बारम्बार हम भव्यकमल के सूर्य।
उपदेशक तत्त्वार्थ के उपाध्याय वैडूर्य।।१०५।।

रत्नत्रयमय, शुद्ध, भव्यजीवरूपी कमलों को प्रफुल्लित करने वाले सूर्य और उपदेश देने वाले उपाध्याय परमेष्ठियों की मैं नित्य बारम्बार वंदना करता हूँ।

कैसे हैं उपाध्याय? सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र युक्त हैं। उनके शुद्धगुण अन्दर उछाला मारते हैं – परिणमते हैं। चैतन्यस्वभावी आत्मा को समझने तथा उसमें स्थिरता करने के जो कामी हैं – ऐसे भव्यजीवरूपी कमल को विकसित करने में उपाध्याय सूर्यसमान हैं। जिनमें योग्यता है, जो विकसित होने की अभिलाषा सहित हैं – उनके लिए वे निमित्त हैं। उपाध्याय महाराज वीतरागकथित नवपदार्थ, सप्ततत्त्व, पंचास्तिकाय आदि का स्वरूप कहने में समर्थ हैं। ऐसे सन्तों के चरणयुगल में मैं पुनः पुनः नमस्कार करता हूँ।

नियमसार गाथा ७५

वावारविप्पमुक्का चउव्विहाराणसयारत्ता।
णिग्गंथा णिम्मोहा साहू दे एरिसा होंति ।।७५।।

आराधना अनुरक्त नित व्यापार से भी मुक्त हैं।
जिनमार्ग में सब साधुजन निर्मोह हैं निर्ग्रन्थ हैं।।७५।।

सभी प्रकार के व्यापार से विमुक्त, चार प्रकार की आराधनाओं में सदा रक्त (लीन) निर्ग्रन्थ और निर्मोह साधु परमेष्ठी होते हैं।

(साधु कैसे होते हैं?) (१) परमसंयमी महापुरुष होने से त्रिकाल-निरावरण निरंजन परम पंचमभाव की भावना में परिणमित होने के कारण ही समस्त बाह्यव्यापार से विमुक्त; (२) ज्ञान, दर्शन, चारित्र और परम तप नाम की चतुर्विध आराधना में सदा अनुरक्त; (३) बाह्य-अभ्यंतर समस्त परिग्रह के ग्रहण रहित होने के कारण निर्ग्रन्थ; तथा (४) सदा निरंजन निज कारणसमयसार के स्वरूप के सम्यक्, श्रद्धान, सम्यक् परिज्ञान और सम्यक्

आचरण से प्रतिपक्ष ऐसे मिथ्या दर्शन, मिथ्या ज्ञान और मिथ्या चारित्र का अभाव होने के कारण निर्मोह; – ऐसे, परमनिर्वाणसुन्दरी की सुन्दर माँग की शोभारूप कोमल केशर के रज-पुंज के सुवर्णरंगी अलङ्कार को (-केशर-रज की कनकरंगी शोभा को) देखने में कौतूहल बुद्धिवाले वे समस्त साधु होते हैं (अर्थात् पूर्वोक्त लक्षणवाले, मुक्तिसुन्दरी की अनुपमता का अवलोकन करने में आतुर बुद्धिवाले समस्त साधु होते हैं)।

साधु का किसी प्रकार भी शरीर-मन-वाणी के व्यापार में जुड़ान नहीं होता, वे उनकी हलन-चलन क्रियाओं के ज्ञाता तो है, पर कर्त्ता नहीं; इसलिए उनको समस्त व्यापार रहित कहा है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप इन चार प्रकार की आराधनाओं में साधु तत्पर होते हैं। बाह्य में वस्त्र-पात्र इत्यादि बहिरङ्ग परिग्रह तथा अन्दर में मिथ्यात्व-रागादि अन्तरङ्ग परिग्रह नहीं होने से साधु निर्ग्रन्थ होता है। मिथ्यात्व तथा अनन्तानुबन्धी आदि तीन कषायों का नाश किया है, इसलिए साधु निर्मोह होते हैं। अन्तरंग में पुरुषार्थ की निर्बलता के कारण संज्वलन कषाय का आंशिक राग होता है। इसके अतिरिक्त सर्व प्रकार के राग का साधु के अभाव होता है।

ज्ञानानन्द स्वभाव में लीनतारूप परम तपस्या में निरत ऐसे सर्व साधुओं के स्वरूप का यह कथन है। सभी साधु आत्मा के भान सहित वीतराग स्वभाव में स्थिर होते हैं। कोई साधु वस्त्र रखे उसे स्थविरकल्पी कहें और नग्न रहे उसको जिनकल्पी कहें – ऐसा वीतराग के शासन में भेद नहीं है। सभी साधु नग्न दिगम्बर आत्मस्वरूप में झूलते हुए ही होते हैं। वीतराग शासन में तो अकेले विचरण करने वाले को जिनकल्पी और मुनियों के समुदाय में विचरने वाले को स्थविरकल्पी कहते हैं। दोनों ही प्रकार के मुनि आत्मभान तथा वीतरागी रमणता सहित नग्न ही होते हैं।

परमसंयमी महापुरुष होने से त्रिकाल निरावरण निरंजन परमपंचमभाव की भावना में परिणमित हुए होने के कारण ही साधु समस्त बाह्य व्यापार से मुक्त होते हैं। आत्मा के भान सहित विशेषस्वरूप रमणता द्वारा इन्द्रियनिरोध

होकर आनन्दरूपी अमृत की जिन्हें डकार आती है, अर्थात् जो आत्मा के आनन्द का अनुभव करते हैं – ऐसे परम संयमी वीतरागी साधु, जो क्षायिकादि चार विभावभावों से रहित हैं और त्रिकाल निरावरण हैं – ऐसे परमपारिणामिकभाव की भावना में परिणमित होने से, बाह्य व्यापार से मुक्त हैं। यहाँ भावना का अर्थ एकाग्रता है, विकल्प नहीं। साधु को वीतरागी अवस्था अर्थात् निर्विकल्प समाधि प्रगट हुई है, इसलिए उनके बाह्य व्यापार भी नहीं होता। वीतराग शासन में सर्व साधुओं का स्वरूप ऐसा ही होता है। कोई अज्ञानी हो अथवा मात्र बाह्य क्रिया करे उसको भी साधु कहा जाय – ऐसा नहीं है। छठे गुणस्थान में विकल्प उठे, उसे भी गौण करके सातवें में विशेषलीन होने वाले ही साधु कहे गये हैं।

औदयिक, औपशमिक, क्षायोपशमिक और क्षायिकभावस्वरूप एक समय की पर्याय से रहित त्रिकालीस्वभाव को परमपंचमभाव – परम पारिणामिकभाव कहते हैं। साधु उसकी भावना में लीन होने से सर्व बाह्य व्यापार से रहित होते हैं।

पुनश्च, साधु ज्ञान, दर्शन, चारित्र और परमतप – इन नामों की चतुर्विध आराधना में सदा अनुरक्त होते हैं। साधु को स्वरूपसाधन की मुख्यता होती है, उपदेश आदि की मुख्यता नहीं होती। उपाध्याय को उपदेश तथा पढ़ाने की भी मुख्यता होती है, और आचार्य को दीक्षा-शिक्षा की भी प्रधानता होती है। तीनों ही आत्मलीन रहने वाले भावलिंगी साधु हैं और परमपारिणामिक भाव की भावना में तत्पर हैं। वे सदा स्वभाव की आराधना करते रहते हैं। आहार आदि के समय भी अन्दर स्वभाव का आश्रय करके अन्तर-शुद्धता का प्रतपन करते हैं, इसलिए उन्हें सदा आराधना वर्त्तती है।

साधु बाह्य-अभ्यन्तर समस्त परिग्रह के ग्रहण रहित होने के कारण निर्ग्रन्थ हैं। जैन शासन में साधु के उपकरण के रूप में संयम-पालनार्थ एक मोरपीछी तथा शौचार्थ एक कमण्डलु होता है। इसके अतिरिक्त वस्त्र-

(शेष पृष्ठ 33 पर ...)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : विकार जब चारित्रगुण की पर्याय की योग्यता से ही होता है तो फिर जब-तक उसमें विकार होने की योग्यता रहेगी, तबतक विकार होता ही रहेगा – ऐसी दशा में विकार टालना जीव के अधीन नहीं रहा ?

उत्तर : एक-एक समय की स्वतंत्र योग्यता है – ऐसा निर्णय किस ज्ञान ने किया? त्रिकाली स्वभाव में ढले बिना ज्ञान में प्रतिसमय की पर्याय की स्वतंत्रता का निर्णय नहीं हो सकता। जब ज्ञान त्रिकाली स्वभाव का लक्ष्य करके उस ओर झुका, तभी स्वभाव की प्रतीति के बल से पर्याय में से राग-द्वेष होने की योग्यता प्रतिक्षण घटती ही जाती है। जिसने स्वभाव का निर्णय किया, उसकी पर्याय में लम्बे समय तक राग-द्वेष बने रहने की योग्यता नहीं रहती – ऐसा ही सम्यक् निर्णय का बल है।

प्रश्न : भगवान आत्मा विकार का कारक है या अकारक ? विकार परद्रव्य से होता है क्या ? यदि नहीं तो परद्रव्य से परांगमुख होने का उपदेश क्यों दिया जाता है ? पर्याय का निर्विकारी होना द्रव्य के आधीन है क्या ? कृपया सब का समाधान कीजिये।

उत्तर : भगवान आत्मा निर्विकार अतीन्द्रिय आनन्द का पिण्ड है, वह विकार का कारण है ही नहीं। परद्रव्य की तरफ लक्ष करने से विकार अवश्य होता है; किन्तु परद्रव्य से विकार नहीं होता। परद्रव्य की ओर लक्ष जाने से पर्याय स्वतन्त्रतया अपने से विकाररूप परिणमन करती है। स्वद्रव्य शुद्ध, आनन्दस्वरूप, चैतन्यमूर्ति है, उससे पर्याय निर्विकार नहीं होती; किन्तु स्वद्रव्य का लक्ष करनेपर पर्याय स्वयं अपने से स्वतन्त्रतया निर्विकार होती है। इसके विपरीत परद्रव्य का लक्ष करने से पर्याय स्वत: विकारी होती है।

अत: आत्मा अकेला स्वभाव से राग का अकारक ही है, यदि आत्मा राग का अकारक न हो तो परद्रव्य से हटने का – परद्रव्य का लक्ष छोडने का उपदेश निरर्थक ठहरे; इसलिये परद्रव्य के लक्ष से ही विकार होता होने से परद्रव्य से परांगमुख होने

का उपदेश है। विकार होने में परद्रव्य निमित्त है। वह निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध ऐसा सूचित करता है कि आत्मा अकेला स्वभाव से विकार का अकारक ही है।

प्रश्न : आत्मा को क्रोधादिरूप अथवा ज्ञानरूप कौन करता है ? क्या कर्म का उदय अथवा प्रतिकूल संयोग उसे अज्ञानरूप नहीं करते ?

उत्तर : जिसप्रकार श्वेत शंख चाहे जितनी काली मिट्टी खावे, तथापि वह काली मिट्टी उसे श्वेत से कृष्ण नहीं कर सकती; उसीप्रकार चैतन्यस्वरूप आत्मा को चाहे जितना तीव्र कर्मोदय आवे अथवा प्रतिकूल संयोग उपस्थित हो, तो भी वे ज्ञानस्वरूप आत्मा को अज्ञानरूप नहीं कर सकते अथवा क्रोधादि कषायरूप नहीं परिणमा सकते। आत्मा जो क्रोधादि अज्ञानरूप परिणमता है, वह तो अपने ही अपराध से परिणमता है, परद्रव्य तो आत्मा को बिलकुल विकार नहीं करा सकता।

देव-गुरु आदि परद्रव्य के कारण आत्मा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप से होता है – ऐसा नहीं है; आत्मा तो स्वयं ही स्वयं से सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप परिणमन करता है और तभी रत्नत्रयगुण प्रकट होता है। परद्रव्य आत्मा को ज्ञानी या अज्ञानी बिलकुल कर ही नहीं सकता। आत्मा स्वयं ही अपने अपराध से क्रोधादिरूप और अपने गुण से ज्ञानरूप होता है।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन तथा केवलज्ञान होने का कारण कौन है ?

उत्तर : सम्यग्दर्शन होने में शुद्धात्मा की प्रतीति के अतिरिक्त अन्य कोई कारण नहीं है, नवतत्त्व के विकल्प भी सम्यग्दर्शन में कारण नहीं है। केवलज्ञान होने में शुद्धोपयोग कारण है, अन्य कोई कारण नहीं है। केवलज्ञान के लिये शुद्धोपयोग के अतिरिक्त अन्य किसी (रागादि) को साधन मानना तो केवलज्ञान का अनादर है, शुद्धोपयोग का अनादर है, धर्म का अनादर है, मोक्ष का अनादर है तथा मोक्ष के साधक शुद्धोपयोगी संतों का भी अनादर है। इस विपरीत मान्यता में महान अपराध है और यह मान्यता संसार का कारण है।

अहो ! शुद्धोपयोग तो केवलज्ञान का राजमार्ग है, शुभराग तो केवलज्ञान को रोकनेवाला है, लुटेरा है। राग को धर्म का साधन माननेवाला तो राजमार्ग का अपराधी है; वह **राजमार्गी** नहीं है, वह तो **रागमार्गी** है अर्थात् संसारमार्गी है।

समाचार दर्शन -

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की वार्षिक –

साहित्यिक व खेलकूद प्रतियोगिताऐं सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु महाविद्यालय द्वारा दिनाँक 3 जनवरी से 10 जनवरी 2017 तक विभिन्न साहित्यिक प्रतियोगितायें सम्पन्न हुई। दिनांक 3 जनवरी को रात्रि प्रवचनोपरान्त श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा प्रतियोगिताओं का उद्घाटन हुआ।

दिनांक 3 जनवरी को रात्रि में **संस्कृत संभाषण प्रतियोगिता** में ऋषभ जैन ने प्रथम एवं चर्चित जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. श्रीयांसजी सिंघई एवं निर्णायक श्री दिनेशजी यादव व श्री रामकुमारजी शर्मा थे। संचालन संदीप जैन व शुभम मड़ावरा ने किया।

दिनांक 4 जनवरी को रात्रि में **उपाध्याय वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में** आप्त जैन ने प्रथम एवं पवित्र जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित संजयजी सेठी ने की। निर्णायक पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, पण्डित प्रदीपजी शास्त्री टीकमगढ एवं डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर थे। संचालन अनुभव जैन भिण्ड व सौरभ जैन ने किया।

दिनांक 5 जनवरी को प्रात: **अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान ऋषभ जैन एवं द्वितीय स्थान मंथन जैन ने प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री आर.पी.गर्ग एवं निर्णायक गुंजा पाटनी एवं प्रतीति पाटील थीं। संचालन अरिहंत जैन व स्वप्निल जैन ने किया।

दिनांक 5 जनवरी को रात्रि में 'धर्म परम्परा नहीं प्रयोग है' विषय पर आयोजित **भाषण प्रतियोगिता (शास्त्री वर्ग)** में जिनेन्द्र जैन ने प्रथम एवं कीर्तिकुमार जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने की। निर्णायक पण्डित संजयजी दौसा एवं श्री सौमित्र आजाद थे। संचालन जिनेन्द्र जैन व प्रशान्त जैन ने किया।

दिनांक 6 जनवरी को रात्रि में 'आखिर क्यों जानें जैनधर्म' विषय पर आयोजित **भाषण प्रतियोगिता (उपाध्याय वर्ग)** में अरिहंत जैन (उपा.वरि.) व अंकुर जैन (उपा.कनि.) ने प्रथम एवं सम्मेद खोत ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अध्यक्षता पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी ने की। निर्णायक के रूप में पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल थे। संचालन दीपक जैन व शुभम जैन भिण्ड ने किया।

दिनांक 7 जनवरी को रात्रि में **अंत्याक्षरी प्रतियोगिता** के अन्तर्गत चर्चित जैन व समकित जैन ने प्रथम तथा शुभांशु जैन कोटा व मधुर जैन सागर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा थे। निर्णायक श्रीमती ज्योति सेठी थी। संचालन विजय जैन व वैभव जैन ने किया।

दिनांक 8 जनवरी को प्रात: **छंदपाठ प्रतियोगिता** में चर्चित जैन प्रथम एवं ऋषभ जैन द्वितीय स्थान पर रहे। कार्यक्रम के अध्यक्ष पण्डित अरुणजी बण्ड तथा निर्णायक श्रीधरजी मिश्र

एवं कृष्णदेवजी शुक्ल थे। प्रतियोगिता का संचालन अर्पित जैन एवं रमन जैन ने किया।

दिनांक 8 जनवरी को रात्रि में **शास्त्री वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता** में ऋषभ जैन ने प्रथम एवं अमन जैन व रमन जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने की तथा निर्णायक के रूप में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा व पण्डित पीयूषजी शास्त्री उपस्थित थे। संचालन अमित जैन व वर्धमान जैन ने किया।

दिनांक 9 जनवरी को रात्रि में **भजन प्रतियोगिता** के अन्तर्गत अनेकान्त जैन ने प्रथम एवं विकेश जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती कनकप्रभा हाडा ने की। निर्णायक श्री गौरवजी सौगानी व श्री राजकुमारजी संघी थे। संचालन आकाश जैन एवं प्रबल जैन ने किया।

दिनांक 10 जनवरी को रात्रि में **काव्यपाठ प्रतियोगिता** के अन्तर्गत पीयूष जैन ने प्रथम एवं अमित जैन व अनुभव जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुरेन्द्रजी दुबे ने की। निर्णायक श्री नवलकिशोरजी दुबे एवं पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल थे। संचालन पीयूष जैन व सिद्धार्थ जैन ने किया।

इसी क्रम में दिनांक 25 से 30 दिसम्बर 2016 तक खेलकूद प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ।

बॉलीवॉल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर शास्त्री द्वितीय-तृतीय वर्ष की ध्रुव टीम तथा द्वितीय स्थान पर उपाध्याय वरिष्ठ की जयगोमटेश टीम रही। **कबड्डी प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर उपाध्याय वरिष्ठ एवं द्वितीय स्थान पर शास्त्री प्रथम वर्ष रही। **स्लो साइकिल प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर आकाश हलाज (उपाध्याय वरिष्ठ) तथा द्वितीय स्थान पर समर्थ जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे। **तश्तरी फेंक प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर आकाश हलाज (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं द्वितीय स्थान पर सागर पाटील रहे। **लम्बी कूद प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर आयुष जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं द्वितीय स्थान पर अक्षय साम (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। **गोला फेंक प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर आयुष जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं द्वितीय स्थान पर आकाश जैन रहे। **शतरंज प्रतियोगिता** प्रथम स्थान पर अमन जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं द्वितीय स्थान पर समर्थ जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे। **कैरम प्रतियोगिता (एकल)** में प्रथम स्थान पर चर्चित जैन एवं द्वितीय स्थान पर श्रेणिक जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) रहे। **कैरम प्रतियोगिता (युगल)** में प्रथम स्थान पर मंथन जैन व अक्षय साम (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं द्वितीय स्थान पर आयुष जैन व प्रतीक जैन रहे। **बैडमिंटन प्रतियोगिता (एकल)** में प्रथम स्थान पर मंथन जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं द्वितीय स्थान पर संभव जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) रहे। **बैडमिंटन प्रतियोगिता (युगल)** में प्रथम स्थान पर मंथन जैन व अक्षय जैन एवं द्वितीय स्थान पर चर्चित जैन व पीयूष जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे।

सभी प्रतियोगिताओं का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष द्वारा हुआ। इस प्रकार संपूर्ण कार्यक्रम अत्यंत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

सिद्धचक्र मंडल विधान संपन्न

(1) जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ बड़ा फुहारा स्थित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर की सत्रहवीं वर्षगांठ पर दिनांक 25 दिसम्बर 2016 से 1 जनवरी 2017 तक श्री सिद्धचक्र मंडल विधान आयोजित हुआ, जिसके आयोजनकर्त्ता श्रीमती पुष्पा जैन धर्मपत्नी स्व.पण्डित ज्ञानचंदजी परिवार थे।

इस अवसर पर पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में स्थानीय विद्वान पण्डित राजेन्द्रकुमारजी, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी, पण्डित विरागजी शास्त्री, पण्डित अभिनयजी शास्त्री, पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री के व्याख्यानों का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित हुये।

विधि विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी के सान्निध्य में पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर, पण्डित विरागजी, पण्डित अभिनयजी आदि के सहयोग से संपन्न हुये। कार्यक्रम में वीतराग-विज्ञान पाठशाला, चेतना मंडल एवं फैडरेशन के सदस्यों का भरपूर सहयोग रहा।

(2) नागपुर (महा.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर की 25वीं रजत जयंती वर्षगांठ एवं श्री पंचबालयति वेदी की द्वितीय वर्षगांठ के अवसर पर श्री मोदी परिवार द्वारा सिद्धचक्र विधान का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर अहिंसा भवन में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही डॉ.राकेशजी शास्त्री द्वारा दोनों समय जयमाला का विशेष स्पष्टीकरण किया गया। रात्रि में विभिन्न ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित सम्मेदजी जैन, पण्डित मनीषजी शास्त्री, पण्डित रवीन्द्रजी महाजन, पण्डित सुदर्शनजी शास्त्री, पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री, पण्डित भूषणजी शास्त्री, पण्डित नितिनजी शास्त्री, पण्डित आशीषजी महाजन, पण्डित वीतरागजी शास्त्री आदि के सहयोग से संपन्न हुये। अन्तिम दिन जिनेन्द्र शोभायात्रा भी निकाली गई।

समस्त कार्यक्रमों का संयोजन श्री अखिल भारतीय जैन युवा महिला फैडरेशन एवं श्री महावीर विद्या निकेतन द्वारा किया गया। **– भूषण शास्त्री (प्रचार मंत्री), नागपुर**

(3) गढाकोटा (म.प्र.) : यहाँ पंचकल्याणक की प्रथम वर्षगांठ के अवसर पर दिनांक 25 से 30 दिसम्बर 2016 तक श्री सिद्धचक्र मंडल विधान आयोजित हुआ।

इस अवसर पर पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा द्वारा समयसार कलश पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. नन्हे भैया द्वारा संपन्न हुये।

शिक्षण शिविर संपन्न

दिल्ली : यहाँ आत्मसाधना केन्द्र पर दिनांक 1 से 8 जनवरी 2017 तक करणानुयोग एवं तत्त्वज्ञान शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. उज्ज्वला शहा एवं श्री दिनेशभाई शहा मुम्बई द्वारा तीनों समय कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर में विद्या निकेतन की समस्त छात्राओं के अतिरिक्त देश-विदेश से पधारे 200 साधर्मियों ने भी लाभ लिया। अन्तिम दिन हस्तिनापुर में बन रहे चिदायतन के शिलान्यास महोत्सव की उद्घोषणा सभा हुई, जिसमें श्री पवनजी जैन मंगलायतन एवं पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन आदि लगभग 500 साधर्मीजन उपस्थित थे।

समस्त कार्यक्रम पण्डित राकेशजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुये।

विश्व णमोकार दिवस संपन्न

जयपुर (राज.) : दिनांक 18 दिसम्बर को सामूहिक जिनेन्द्र आराधना ग्रुप जयपुर के तत्त्वावधान में विश्व के 200 से अधिक जिनमंदिरों में एकसाथ सामूहिक णमोकार मंत्र की आराधना की गई, जिसका मुख्य कार्यक्रम भट्टारकजी की नसियां, जयपुर में आयोजित हुआ। वहाँ टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय सहित जयपुर के समस्त जैन विद्यालयों के 200 से अधिक विद्यार्थियों द्वारा सामूहिक णमोकार मंत्र का गायन हुआ।

इस अवसर पर प्रसिद्ध गायक श्री गौरव सौगानी आदि 10 प्रसिद्ध कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति दी। इस प्रसंग पर णमोकार महामंत्र की महिमा संबंधी मार्मिक बिन्दुओं पर **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** के मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला। ज्ञातव्य है कि संपूर्ण कार्यक्रम का जिनवाणी चैनल पर लाइव प्रसारण किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम श्री राकेश गोधा, श्री पवन पाण्ड्या, रोटे.सुधीर जैन, श्री संजय पाण्ड्या एवं श्री योगेश टोडरका आदि के सक्रिय सहयोग से संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रवीण वोरा ने किया।

पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक 25 दिसम्बर 2016 को श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ के जन्म एवं तप कल्याणक तथा चन्द्रप्रभ भगवान के जन्म एवं तप कल्याणक के अवसर पर श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया।

विधान के माध्यम से **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** द्वारा पार्श्वनाथ भगवान के संपूर्ण जीवन चरित्र की जानकारी सभी साधर्मियों को दी गई। विधान के समस्त कार्य आपके निर्देशन में श्री विजयकुमारजी सौगानी आदि के सहयोग से संपन्न हुये।

कार्यक्रम का आयोजन पण्डित अनुज शास्त्री, श्रीमती प्रभा-अजितजी जैन द्वारा हुआ।

शीतकालीन शिक्षण शिविर संपन्न

तिरुवण्णामलै (तमिलनाडु) : यहाँ वंदवासी के निकट कील सात्तमंगलम श्री चन्द्रप्रभ जैन मंदिर ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति केन्द्र व आचार्य कुन्दकुन्द तत्त्वप्रचार केन्द्र, पोन्नूर हिल के द्वारा उपर्युक्त गाँव में दिनांक 30 दिसम्बर 2016 से 1 जनवरी 2017 तक शीतकालीन जैन धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। यह गाँव का पहला एवं कुन्दकुन्द केन्द्र का 66वाँ शिविर है।

शिविर में कक्षाओं, प्रवचनों एवं अन्य गतिविधियों का संचालन श्री जम्बूकुमारजी शास्त्री, डॉ. उमापति जैन शास्त्री, श्री अशोककुमारजी शास्त्री, श्री जयराजनजी शास्त्री, श्री नाभिराजजी शास्त्री, श्री सुरेशजी शास्त्री, श्री जिनकुमारजी शास्त्री आदि ने किया। शिविर में जिनेन्द्र पूजन, शास्त्रचर्चा, प्रश्नमंच, भक्ति आदि कार्यक्रम भी हुये।

इस तीन दिवसीय शिक्षण शिविर में बालबोध पाठमाला की कक्षाएँ ली गईं। शिविर के आयोजन में आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति केन्द्र के ट्रस्टी श्री अनंतरायजी, श्री सी एस पी जैन एवं स्थानीय महानुभाव श्री धरणेन्द्रदासजी का भी तन-मन-धन से सहयोग रहा।

इस अवसर पर आधुनिक तकनीक के रूप में कम्प्यूटर पॉवर पॉइन्ट प्रजेन्टेशन की विधि भी अपनाई गई। शिविर के अंतिम दिन परीक्षा आयोजित करके विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। शिविर में बालकों एवं युवाओं ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। **– डॉ. बी उमापति जैन**

तत्त्वार्थसूत्र मंडल विधान संपन्न

शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ सावरकर कॉलोनी स्थित श्री वासुपूज्य जिनालय में जिनमंदिर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक 6 से 9 जनवरी तक श्रीमती रचना-नवीन जैन परिवार द्वारा श्री तत्त्वार्थसूत्र मंडल विधान संपन्न हुआ। ध्वजारोहण श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा द्वारा हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित विरागजी शास्त्री, ब्र. सुनीलजी शास्त्री आदि के प्रवचनों का लाभ मिला। विधि विधान के समस्त कार्य पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा संपन्न हुए।

द्वितीय वार्षिकोत्सव संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ दिगम्बर जैन चैत्यालय रामपुरा में द्वितीय वार्षिकोत्सव रत्नत्रय मंडल विधानपूर्वक अत्यंत धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम के प्रवचनों का लाभ मिला। विधान का अर्थ पण्डित जयकुमारजी ने समझाया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अशोकजी शास्त्री द्वारा संस्थान के बालकों के सहयोग से किये गये। कार्यक्रम का संचालन पण्डित शनि शास्त्री एवं सचिन शास्त्री ने किया।

सम्यग्ज्ञान गोष्ठी एवं प्रवचनसार मंडल विधान संपन्न

सिद्धायतन-द्रोणगिरी (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 18 से 25 दिसम्बर तक सम्यग्ज्ञान गोष्ठी एवं प्रवचनसार विधान अभूतपूर्व सफलता के साथ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तीन दिन ब्र.रवीन्द्रजी 'आत्मन्' द्वारा प्रात: एवं दोपहर में प्रवचनसार पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा भी प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात:कालीन प्रौढ कक्षा ब्र. अमित भैया विदिशा द्वारा ली गई। साथ ही समय-समय पर पण्डित मनोजीजी करेली, पण्डित कमलेशजी मौ, पण्डित पीयूषजी जयपुर,, पण्डित महेन्द्रजी इन्दौर, ब्र. चन्द्रेश भैया शिवपुरी, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित शुभम शास्त्री सिद्धायतन के स्वाध्याय का भी लाभ प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर की अध्यक्षता में रत्नत्रय गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें ब्र. नन्हे भैया सागर, पण्डित मनोजजी करेली, पण्डित निर्मलजी सागर, पण्डित गुलाबचंदजी बीना ने अपने विचार प्रस्तुत किये। गोष्ठी का संचालन शुभम शास्त्री सिद्धायतन ने किया। इस अवसर पर आचार्यय समन्तभद्र संस्थान के छात्रों ने श्री गुरुदत्त नाटिका का मंचन किया, जिसे समागत अतिथियों ने खूब सराहा।

वृहद् शांति विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ जौहरी बाजार स्थित दीवान भदीचंदजी के मंदिर में दिनांक 18 दिसम्बर को श्रीमती सुभद्राजी शाह की स्मृति में वृहद् शांति विधान का आयोजन बहुत धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर 100 से अधिक साधर्मियों ने लाभ लिया। विधि-विधान के समस्त कार्य **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा** एवं श्री विजयकुमारजी सौगानी आदि के सहयोग से संपन्न हुये। कार्यक्रम का आयोजन स्व. सुभद्राजी के सुपुत्र श्री प्रमोदजी शाह परिवार की ओर से किया गया।

आगामी कार्यक्रम...

हस्तिनापुर (उ.प्र.) में तीर्थधाम चिदायतन का शिलान्यास समारोह दिनांक 12 व 13 फरवरी 2017 तक आयोजित होने जा रहा है। सभी साधर्मीजन सपरिवार कार्यक्रम का लाभ लें।

निवेदक – श्री शांतिनाथ-अकम्पन-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट हस्तिनापुर।

संपर्क सूत्र – मुकेशचंद जैन (9837079003), अशोक लुहाड़िया (9897890893)

E-mail : nairkcd@yahoo.com; info@mangalayatan.com; mukeshjain09@gmail.com

चतुर्थ वार्षिक महोत्सव संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ सीमंधर जिनालय में श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन आत्मार्थी ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 6 से 8 जनवरी तक सीमंधर जिनालय का चतुर्थ वार्षिक महोत्सव श्री सिद्धपरमेष्ठी विधानपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर व पण्डित संजयजी मंगलायतन द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। पण्डित संजयजी द्वारा संगीतमय जैनकथा का आयोजन भी हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी मंगलायतन द्वारा संपन्न हुये। अन्तिम दिन नवीन भूखंड पर संस्कार भवन का शिलान्यास श्री महाचंदजी प्रकाशचंदजी सेठी परिवार भीलवाड़ा द्वारा विधि-विधानपूर्वक पण्डित संजयजी के निर्देशन में संपन्न हुआ। त्रिदिवसीय यह महोत्सव श्री सुखमालजी चौधरी एवं श्री अशोकजी सेठी के निर्देशन में संपन्न हुआ।

नुक्कड़ नाटिका का मंचन

जयपुर (राज.) : यहाँ जग्गा की बावड़ी स्थित दिगम्बर जैन मंदिर के प्रांगण में दिनांक 4 दिसम्बर को तथा संघीजी का मंदिर सांगानेर में दिनांक 11 दिसम्बर को णमोकार महामंत्र की महिमा बताने के लिये नुक्कड़ नाटक के रूप में विशेष नाटिका का मंचन किया गया।

यह नाटक युवा विद्वान **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा** के मार्गदर्शन में प्रसिद्ध नाट्यकर्मी श्री अजय जैन के निर्देशन में अरिहंत नाट्य संस्था के अनुभवी कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया। सैकड़ों साधर्मियों ने इस नाटक के माध्यम से णमोकार मंत्र की महिमा एवं उसका ज्ञान प्राप्त किया।

इन्टरनेशनल यूथ कन्वेन्शन संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ दिनांक 30 दिसम्बर 2016 से 1 जनवरी 2017 तक चतुर्थ इन्टरनेशनल यूथ कन्वेन्शन का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिदिन गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** द्वारा प्रतिदिन लगभग 6-6 घंटे **'जैनदृष्टि में तीन लोक'** विषय का प्रोजेक्टर द्वारा बहुत आकर्षक ढंग से प्रस्तुतिकरण किया गया।

इस अवसर पर रत्नत्रय महामंडल विधान का आयोजन पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर के कुशल निर्देशन में हुआ तथा सायंकाल आपके ही द्वारा जिनेन्द्र भक्ति का भी सुन्दर आयोजन हुआ।

दिनांक 31 दिसम्बर को नूतन वर्ष का शुभारंभ रात्रि 12 बजे गुरुदेवश्री के मांगलिक एवं 'मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ' के माध्यम से हुआ। इस प्रसंग पर डॉ. संजीवजी गोधा के मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला, साथ ही लगभग 2 घंटे पण्डित विवेकजी के सान्निध्य में विविध आध्यात्मिक पाठ एवं जिनेन्द्र भक्ति का सुन्दर आयोजन हुआ। संपूर्ण कार्यक्रम का संयोजन एवं कुशल निर्देशन पण्डित देवांग गाला मुम्बई एवं उनकी पूरी टीम द्वारा किया गया।

श्री समयसार विधान संपन्न

गजपंथा-नासिक (महा.) : यहाँ गजपंथ फाउन्डेशन ट्रस्ट नासिक द्वारा दिनांक 10 व 11 दिसम्बर को नवनिर्मित संकुल श्री कुन्दकुन्द कहान भवन का भव्य उद्घाटन समारोह एवं श्री समयसार विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 10 दिसम्बर को प्रात:काल जिन-प्रक्षाल तथा श्रीजी, जिनवाणी व मंगल कलश शोभायात्रा, ध्वजारोहण, विधान मण्डप उद्घाटन एवं मंगल कलश स्थापना आदि कार्यक्रम हुये। तत्पश्चात् उद्घाटन समारोह का आयोजन हुआ। सभा के तुरन्त बाद कुन्दकुन्द कहान भवन, मुमुक्षु निवास, छात्रावास, भोजनालय, यात्री निवास आदि का उद्घाटन अनेक महानुभावों द्वारा हुआ। साथ ही सम्यग्दर्शन भवन, सम्यग्ज्ञान भवन तथा सम्यक् चारित्र भवनों का उद्घाटन भी हुआ। दिनांक 11 दिसम्बर को समयसार मंडल विधान ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री एवं पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ द्वारा संपन्न हुआ। संपूर्ण कार्यक्रम ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर एवं श्री हेमन्तजी शास्त्री तथा सभी ट्रस्टीगण के सान्निध्य में संपन्न हुआ।

(पृष्ठ 23 का शेष ...)

पात्रादि कोई परिग्रह नहीं होता। महाविदेहक्षेत्र में इस समय भी ऐसे साधु हैं; पहले यहाँ भी ऐसे भावलिंगी वनवासी स्वरूपमग्न साधु थे। और भविष्य में भी ऐसे साधु होंगे। तीनों काल में साधु का स्वरूप यही होता है। जिसकी अन्तरङ्ग से मिथ्यात्व और राग-द्वेष की ग्रन्थि भिद गई है, उसे निर्ग्रन्थ साधु कहते हैं। दया-दानादि का विकल्प भी अपना स्वरूप नहीं है – ऐसा साधु मानते हैं। उस विकल्प की साधु को पकड़ नहीं होती।

सदा निरंजन निजकारणसमयसार के स्वरूप के सम्यक् श्रद्धान, सम्यक् परिज्ञान और सम्यक् आचरण से प्रतिपक्ष ऐसे मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र का अभाव होने से साधु निर्मोह होते हैं। त्रिकाली कारणसमयसारस्वरूप भगवान आत्मा की सच्ची श्रद्धा, सच्चा ज्ञान और उसमें रमणतारूप सच्चा आचरण मोक्षमार्ग है और उससे प्रतिपक्ष मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र संसारमार्ग है। पुण्य से धर्म माने, पर का कर्त्तापना माने तथा व्यवहार से – शुभराग से लाभ माने वह मिथ्यादर्शन है। ऐसा मिथ्यात्व मुनि के नहीं होता तथा उनको मिथ्याज्ञान, मिथ्याचारित्र का भी अभाव होता है। राग में अटकते हुए, राग का सेवन करते हुए चारित्र मानने वाले साधु नहीं हो सकते; साधुगण तो अन्तरङ्ग वीतरागी रमणता को चारित्र मानते हैं, राग को नहीं। **(क्रमश:)**

स्मृति ग्रन्थ हेतु सामग्री प्रेषित करें

सभी मुमुक्षु मण्डलों व साधर्मीजनों से निवेदन है कि प्रसिद्ध जैन विद्वान बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के स्मृति ग्रंथ हेतु उनके संस्मरण, फोटोज़, रेखाचित्र, हस्तलिखित सामग्री, स्मृतिचिह्न, विशेष व्याख्यानों के टेप, प्रकाशित लेख-कविता-पुस्तक आदि महत्वपूर्ण सामग्री यथाशीघ्र प्रेषित करें। यह सामग्री आपके नामोल्लेखपूर्वक ही प्रकाशित होगी। जिन महानुभावों/संस्थाओं ने युगलजी की उपस्थिति में या उनके देहवियोग के उपरान्त विशेषांक/स्मृति अंक आदि कुछ भी प्रकाशित किये हैं,उनकी भी एक-एक प्रति प्रेषित करें। उनका विवरण भी प्रकाशित किया जायेगा। **सामग्री भेजने का पता –** प्रो.सुदीप कुमार जैन, बी-32, छतरपुर एक्सटेंशन, नंदा हॉस्पिटल के पीछे, नई दिल्ली-110074 मो.नं.- 09810660657, 08750332266
Email : skjainlbs@yahoo.co.in; chinmay85@yahoo.co.in

विशेष निवेदन – जो भी सामग्री ईमेल द्वारा भेजी जाये, उसकी हस्ताक्षरित प्रति भी डाक (स्पीड पोस्ट) द्वारा अवश्य भेजी जाये।

वैराग्य समाचार

(1) शिकागो (अमेरिका) निवासी श्री निरंजन सी. शाह का दिनांक 28 दिसम्बर 2016 को 74 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप शिकागो मुमुक्षु मण्डल के आधार स्तम्भ एवं **JAANA** के प्रमुख थे। आपने शिकागो जैन मंदिर, शिकागो जैन सेन्टर एवं **JAINA** को बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आपने 44 वर्ष की आयु में इंजिनियरिंग से सेवानिवृत्ति लेकर स्वाध्याय में समय व्यतीत किया।

(2) ललितपुर (उ.प्र.) निवासी श्रीमती भागवतीबाई धर्मपत्नी श्री गुलाबचंदजी का दिनांक 20 जनवरी 2017 को 91 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल व पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की बड़ी बहिन थीं।

(3) महिदपुर सिटी-उज्जैन (म.प्र.) निवासी पण्डित शांतिलाल सौगानी की धर्मपत्नी **श्रीमती कमलाबाई सौगानी** का 81 वर्ष की आयु में दिनांक 28 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी, धर्मपरायण व सरल महिला थीं।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

मुम्बई में डॉ. भारिल्ल के प्रवचन

मुम्बई : यहाँ जवेरी बाजार स्थित सीमन्धर जिनालय में दिनांक 14 से 16 जनवरी 2017 तक तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंद भारिल्ल द्वारा प्रवचनसार की गाथा 99 पर प्रवचनों का लाभ मिला। इस अवसर पर अनेक साधर्मियों ने पधारकर तत्त्वज्ञान का लाभ लिया।

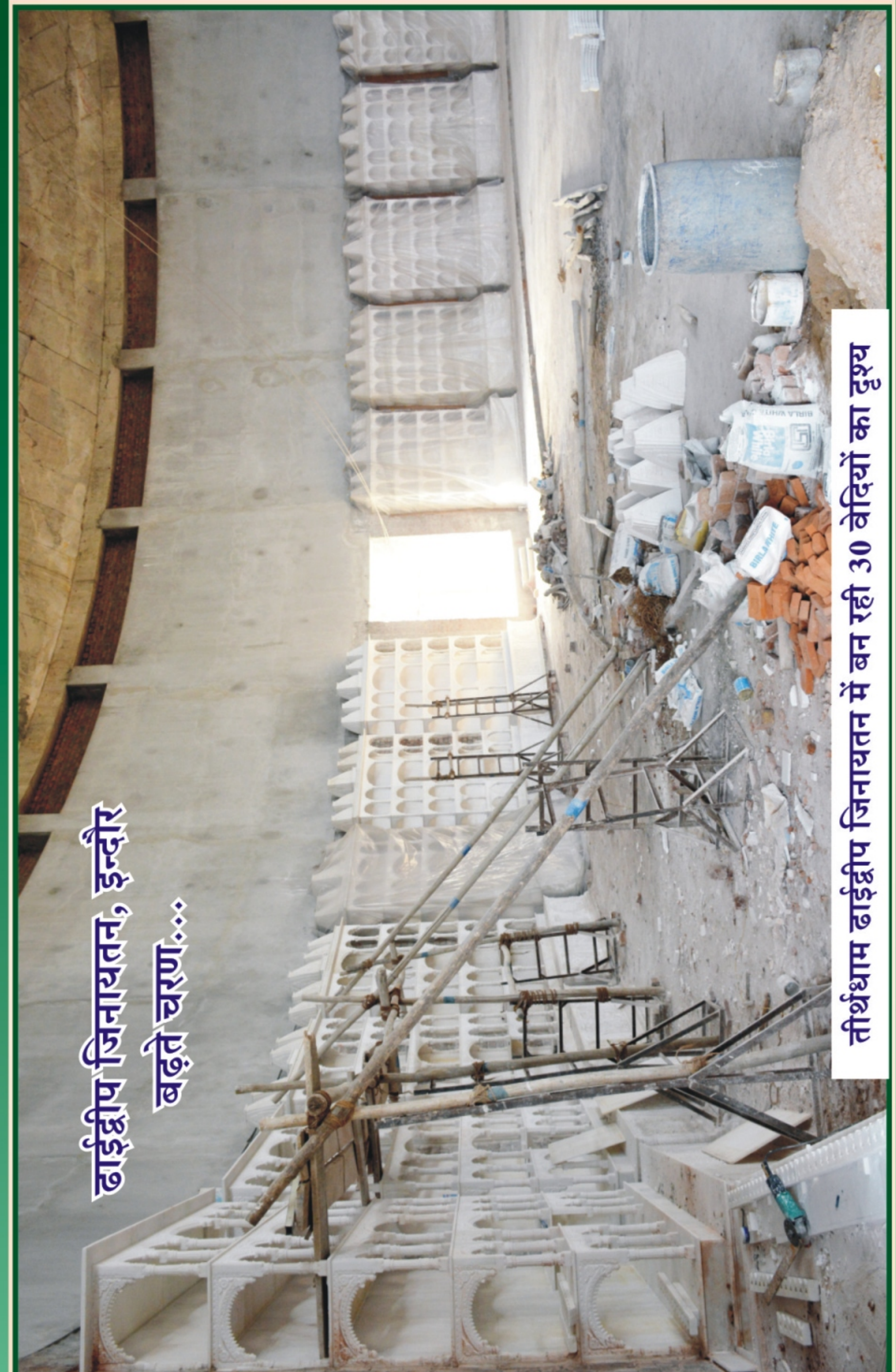

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2015-17*

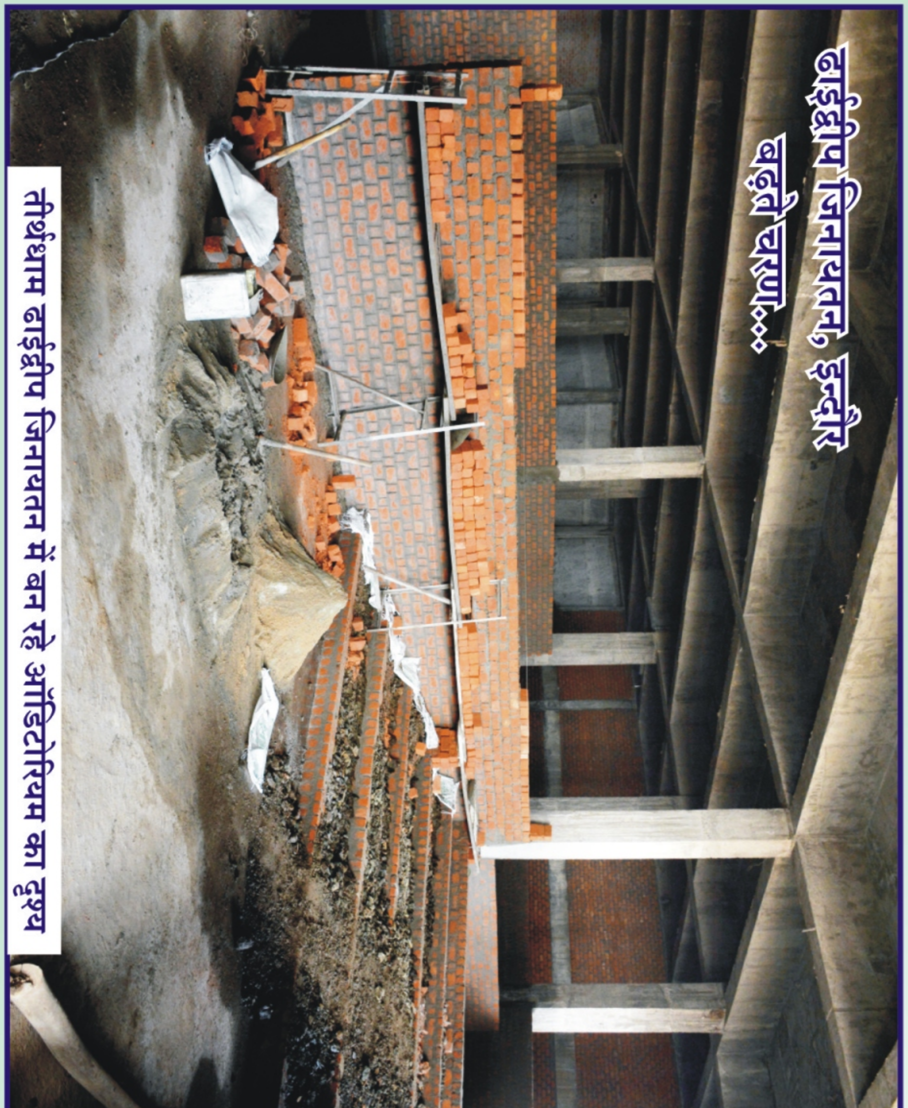

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में बन रहे ऑडिटोरियम का दृश्य

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**